गुरुवाणी

आप हमारे साथ रहिये। हमारे कंधे से कंधा मिलाकर चलिये। हमारा हाथ बनिये....जिससे कि हम इस समाज को एक अच्छी दिशा दे सके, एक अच्छे समाज की परिकल्पना कर सके।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

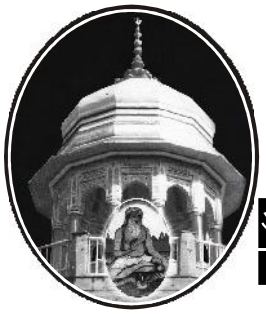

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्नाऽपरो मन्त्रो नास्ति तत्वम् गुरौः परम्।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No-G-2/VSI (E)-04/2016-18

युग-उद्धारक मुनि विज्ञानी। बाबा गौतम औघड़ दानी।।

वर्ष-१६, अंक ९, वाराणसी। रविवार १५ मई २०१६ ई० सहयोग राशि ४.२५

हर्षोल्लास से मनाया गया ४५वाँ प्राकट्य दिवस एवं सम्पन्न हुआ सामूहिक परिणय

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रमिक दिवस १ मई २०१६ दिन रविवार बाबा कीनाराम स्थल, क्रींकुण्ड, वाराणसी में परम पूज्य अघोराचार्य बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी का ४५वाँ प्राकट्य दिवस बड़े ही धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में करतल ध्वनि एवं जयकारों के साथ मनाया गया। स्थल से जुड़े श्रद्धालुओं का आगमन परम्परानुसार एक दिन पूर्व से ही होने लगता है तथा वे स्थल परिसार में आकर बारादरी एवं अन्य उपयुक्त स्थानों पर स्नान दर्शन, पूजन के पश्चात् प्रसाद ग्रहण कर अपनी थकान भी दूर करते हैं ताकि समारोह दिवस को सभी धार्मिक, अध्यात्मिक, गतिविधियों में सपरिवार पूर्णरूपेण प्रतिभाग कर सके। इस प्रकार लगभग सम्पूर्ण परिसर श्रद्धालुओं की उपस्थिति से पट सा जाता है। दर्शनार्थियों के जन सैलाब को दृष्टिगत रखते हुए जन जन के हित में कार्यशील संस्था ''अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान'' के स्वयंसेवकों द्वारा पूर्व में ही दैनिक साफ सफाई एवं साजसज्जा की चाक-चौबंद व्यवस्था कर दी जाती है। इस वर्ष भी विगत वर्षों की भांति प्राकट्य दिवस समारोह के साथ ही छः युगलों के सामूहिक शुभ परिणय की भी व्यवस्था के अन्तर्गत न केवल सिंहद्वार अघोरेश्वर समाधियों, बल्कि सम्पूर्ण परिसर ही विद्युत झालरों, कारपेट फर्श पर दरी एवं कनातों से सजाया गया था। शाम को अन्नपूर्णा नगर से लेकर मुख्य द्वार तक तथा बाहर विद्युत रोशनी के झिलमिल प्रकाश में पूरा परिसर जगम हो उठा था श्रीचरण के सायं काल स्थल में पधारते ही हर हर महादेव के समवेत जयघोष से पीठाधीश्वर जी का स्वागत किया गया। श्रद्धालुगण द्वारा बड़े ही अनुशासित एवं शान्तचित्त से कतारबद्ध होकर ''अघोराचार्य निवास'' में श्रीचरण के दर्शन का लाभ उठाया जाता रहा। प्राकट्य दिवस के शुभ अवसर पर पूर्व निर्धारित छः युगलों के पावन-परिणय हेतु स्थल परिसर में परमपूज्य बाबा भगवान राम जी के भव्य निर्माणाधीन समाधि के ठीक पश्चिम एवं दक्षिण एक आकर्षक मंच सजाया गया था जिसके मध्य में परम पूज्य औघड़ भगवान राम जी के भव्य चित्र को चित्राकर्षक मंदिर निर्मित कर स्थापिता किया गया था। भव्य मंच के ठीक सामने श्रद्धालु दर्शकों बारातियों, घरातियों एवं परिवार जनों के बैठने की व्यवस्था हेतु करीने से मुक्ताकाश में कुर्सियाँ रखी गई थी। स्थल परिसर में इसी भांति अन्नपूर्णा नगर के प्रत्येक तल पर प्रसाद पाने की व्यवस्था की एवं समस्त जनों के जलपान हेतु विविध व्यंजनों का स्टाल कुंड के पश्चिम बाबा कीनाराम जी के विशाल मूर्ति के दक्षिण एवं पूरब की तरफ सजाया गया था एवं पर्याप्त कुर्सियां लगायी गई थी।

निर्धारित सायं आरती साढ़े सात बजे की सम्पन्नता एवं प्रसाद वितरण के पश्चात् उपस्थित जन-समूह के जयकारों के मध्य शिवस्वरूप श्रीचरण बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी की काशी के विद्वत जनों द्वारा विविधत स्वस्ति वाचन के साथ अर्चना की गई एवं तिलक लगाया गया। तत्पश्चात् पीठाधीश्वर जी द्वारा मंच की ओर स्वयंसेवकों के साथ प्रस्थान किया गया, जहाँ पूर्व से ही मंच के नीचे एवं मंच पर करीने से औघड़ संत पूज्यपाद प्रियदर्शी राम जी (बनौरा आश्रम, छत्तीसगढ़) पूज्य श्री कर्मवीर राम जी (बनौली आश्रम, सिंगरौली, म०प्र) एवं पूज्य की समूह रत्न राम जी (कुनकुरी आश्रम, छत्तीसगढ़) के विराजने हेतु आसन लगाया गया था। पूज्यपाद पीठाधीश्वर जी के पधारते ही चहुँओर श्रद्धालुओं में उत्साह की लहर फैल गई एवं गगनभेदी ''हर हर महादेव'' के जयघोष के साथ मंच के पूरब की ओर लगाये गये सोफे एवं कुर्सियों पर अघोर संतों ने स्थान ग्रहण किया था, जहाँ पुनः शेष श्रद्धालुओं द्वारा भावपूरित श्रद्धा के साथ प्रणाम एवं साष्टांग किया जाता रहा। संतों के ठीक पीछे क्रमवार रूप से परिणय हेतु पधारे छः वर-वधुओं को भी मंच के कुशल संचालनकर्ता अघोर भक्त श्री सूर्यनाथ सिंह के द्वारा आमंत्रित किया गया एवं सादर बैठने का अनुरोध किया गया।

इस प्रकार समस्त छः युगल श्रीचरण को चरण आभा लेकर अपने-अपने निर्धारित स्थान पर बैठते रहे। इस पावन अवसर पर परिणय हेतु निम्न युगलों के द्वारा अपने भावी दाम्पत्य जीवन को संवारने एवं वर्तमान युवा पीढ़ी को एक मंच संदेश देकर अघोर नवप्रभात को स्वीकारने एवं दहेज जैसी विषैली कुरीतियों के तिलांजलि देने की प्रथा का श्रीगणेश किया गया।

(१) सौ० सुप्रिया सिंह आत्मजा श्री सूर्यनारायण सिंह, इलाहाबाद *संग*
चि० नवीन कुमार सिंह आत्मज श्री नीरू भूषण सिंह, प्रयाग, इलाहाबाद।

(२) सौ० रूपाली आत्मजा पुत्री स्व० विजय जी, लखनऊ *संग*
चि० अभिनव सिंह पुत्र श्री अनिल सिंह, मुकेरीगंज, आजमगढ़।

(३) सौ० विभा० सिंह आत्मजा स्व० रमेश सिंह जी निवासी बजरंग नगर, पाण्डेयपुर, वाराणसी *संग*
चि० आशुतोष विक्रम सिंह पुत्र ब्रह्मनिष्ठ रमेश जी निवासी बरौली, गाजीपुर।

(४) सौ० जया सिंह आत्मजा श्री राजबल्लभ सिंह निवासी डेहरी, सासाराम *संग*
चि० हिमांशु सिंह आत्मज श्री जयप्रकाश सिंह निवासी बदलापुर, जौनपुर।

(५) सौ० चाँदनी सिंह आत्मज स्व० सुरेन्द्र गहकर निवासी झारखण्ड। *संग*
चि० विजय सिंह, आत्मज श्री दुलारे सिंह निवासी विशेश्वरगंज, वाराणसी

(६) सौ० आख्या सिंह आत्मजा श्री राकेश सिंह निवासी दिलशादपुर, जौनपुर *संग*
चि० अम्बरीष कुमार सिंह आत्मज श्री अरुण कुमार सिंह निवासी जफराबाद, जौनपुर।

संचालक महोदय के सादर आग्रह को स्वीकार कर पीठाधीश्वर जी के साथ ही तीनों संतों ने मंच पर अपने-अपने आसन को ग्रहण किया, इस नयनाभिराम झांकी को श्रद्धालुगणों द्वारा 'हर हर महादेव' के साथ प्रणाम किया गया। संचालक जी के सादर अनुरोध पर पीठाधीश्वर जी के साथ ही मंच पर उपस्थित संतों द्वारा परमपूज्य के चित्र पर माल्यार्पण किया गया एवं पीठाधीश्वर जी के द्वारा अघोरेश्वर की आरती की गई कुर्सियों पर एवं चारों ओर बैठे भक्तों द्वारा खड़े होकर इस अद्भुत नजारे को निहारा गया।

तत्पश्चात् अघोर भक्त श्री दुर्गेश जी एवं धनंजय जी थाल में ४५ दीपों की आरती से श्रीचरण के प्राकट्य दिवस पर सादर नमन किया गया। संचालन महोदय के अनुरोध पर पूर्व ब्लाक प्रमुख आजमगढ़ से पधार श्रीरामजनम सिंह, अघोर सेवा मण्डल के उपाध्यक्ष श्री रणजीत सिंह, एडवोकेट, वरिष्ठ अघोर भक्त श्री श्यामनारायण पाण्डेय जी, वाराणसी, श्री सी०एन०ओझा, सम्पादक ''अघोरेश्वर निनाद'', वाराणसी के द्वारा मंच पर बैठे

शेष पृष्ठ दो पर

माँ गुरु शरणम्

सद्गुरु के वाक्य को सभी मंत्रों का मूल बताते हुये भूतभावन भगवान भोलेनाथ के द्वारा स्वयं कहा गया है—

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोवाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।

यानी ''सब तज हरि भज'' को चरितार्थ करते हुये गुरु के वाक्य यानी गुरुवाणी का ही ध्यान किया जाय, मनन किया जाय, क्रियान्वयन एवं अपने जीवन में अपनाने, अनुपालन करते रहने का व्रत ले लिया जाय तो सहज में ही गणेश-परिक्रमा की भांति, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। माँ गुरु के आलिंगन में, शरण में अपने को शरणागत कर देने का अर्थ है। अब आपको सद्गुरु के प्रभा मंडल के अघोर-सागर में अपना लिया गया। आगे सद्गुरु की कृपा से ही व्यक्ति यानी भक्त का सद् कल्याण अपने आप होती चला जायेगा, यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रही है जैसे अबोध बालक के पालन-पोषण, उसके संस्कार-शिक्षा, स्वास्थ्य की जिम्मेदारी की चिन्ता सबसे अधिक उसके माता यानी माँ की होती है। माँ बिना झिझक किसी भी स्तर तक कष्ट सहकर अपने शिशु की रक्षा तब तक करती है, उसे अनावश्यक अवांछनीय, वर्जनीय स्थानों तक जाने से उसके प्रति सतत सचेष्ट रहती है, जब तक अबोध बोध अवस्था को नहीं प्राप्त कर लेता। इस प्रक्रिया को प्राकृतिक रूप से पूरी सृष्टि की जननी के द्वारा अपनाया जाता है यहाँ तक कि भावविहीन जानवरों तक द्वारा माँ को शिशु के तन, मन का सतत ख्याल होता है, उसे अपने कष्ट की चिन्ता जरा भी नहीं होती यदि शेर भी अचानक आ जाये तो अपने शिशु के रक्षार्थ सबसे पहले वह स्वयं को ही समर्पित कर देगी ठीक उसी प्रकार अथाह उदारता के सागर औघड़ सद्गुरु के आशुतोषी प्रवृत्ति की गोद में जब एक बार भक्त चला आता है तो वे सतत उसकी रक्षा हर प्रकार के रक्षा, सुरक्षा हेतु तत्पर हो जाते हैं। आवश्यकता है शिष्यत्व के गुणों को धारण कर लेने की। शिष्यत्व धारण करने का सरल अर्थ है अपने गुरु के प्रति अटूट आस्था एवं विश्वास जगाये रहने का कहा गया है कि ''बिन विश्वास न कौनो सिद्धि'' यद्यपि यह भी कई जन्मों, जन्मान्तरों के पुण्य प्रताप ही फल है कि किसी को सद्गुरु का सानिध्य मिल जाय फिर सब कुछ स्वमेव घटित होने लगता है। गुरु शिष्य में फिर तादाकार यानी प्राण एवं शरीर का सर्वथा स्थापित होता जाता है। शिष्य या भक्त की चैतन्यता उसके पाल्य जनों की चिन्ता उसके सांसारिक जीवन में सामाजिक शुभेच्छओं की संख्या का ऐसा वातावरण तैयार हो जाता है कि भवसागर को बड़े ही आराम एवं आनन्ददायक यात्रा की भांति शिष्य पूरा करता है।

जीवन में गुरु की आवश्यकता शरीर में मस्तिष्क विवेक एवं चक्षु की भांति होता है। विवेकहीन, भावनाहीन, चक्षुहीन व्यक्ति के लिये जैसे संसार सारहीन एवं नीरस प्रतीत होता है। वस्तुतः वही स्थिति सद्गुरु के बिना व्यक्ति या मानव की होती है।

सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं वर्तमान कलियुग के दृष्टान्तों पर यदि हम गौर करें तो उभयनिष्ठ रूप से गुरु प्रताप का प्रभाव हर युग में बढ़ता ही गया है। कलियुग में तो राम के नाम के प्रभाव की महत्ता को वर्णित करते हुए संत तुलसीदास जी कहते है ''कलियुग केवल नाम अधारा सुमिरि सुमिरि नर उतरही पारा'' यानी ''तुलसी ''रा'' के कहत ही निकसत पाप पहार'' ज्यों निकसै आवन नहीं देत मकारिक पार'' अर्थात् मुख के उच्चारण से ही कलिकाल में ''रामनाम'' जन्म-जन्मान्तरों के दोष, परम कलुष, कल्मष को निकालने के बाद पुनः घर करने नहीं देता। इसी समीकरण के अन्तर्गत महान अशोक ने अपने गुरु सिद्धार्थ (गौतमबुद्ध) चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु चाणक्य क्षत्रपति शिवाजी के समर्थ गुरु रामदास विवेकानन्द जी के सद्गुरु रामकृष्ण परमहंस की श्रेणी तत्कालीन समाज के सुख-समृद्धि एवं ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' के वातावरण सृजन हेतु ईश्वर तुल्य ही है। ठीक उसी भाँति आज के विषाक्त वातावरण की शुद्धि हेतु सम निरीह, स्वार्थी, क्षुद्रता से ओतप्रोत निराश्रित, मानव उद्धार हेतु कृतसंकल्प लहराता हुआ अघोर-सागर प्राकृतिक रूप से एक वृहद् परिवार के संतुष्ट सदस्यों की भांति हमारे आलिंगन को कटिबद्ध है। क्योंकि यह सागर की महिमा होती है कि सभी नदियों, नालों, दरिया, सरिता को अपने में एकाकार कर लें तथा तब व्यक्ति की स्थिति ''सुखी मीन ज्यों नीर अगाधा, जिमि हरिशरण न एकउ बाधा।।'' की हो जाती है एवं जीवन यात्रा का यथार्थ आदि प्राप्त कर 'हम जिमि बालक राखउँ महतारी' के तर्ज पर सलिल अघोर के अनन्त सागर में समाहित होकर मोक्ष को प्राप्त करते है, यानी परब्रह्म की प्राप्ति कर जीव आवागमन से मुक्त हो जाता है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

हर्षोल्लास से मनाया गया.....

परम पूज्य पीठाधीश्वर जी के साथ ही समस्त संतों को माल्यार्पण कर अपने को कृतार्थ किया गया।

श्रद्धालु भक्तों के बाल सुलभ अनुरोध पर मंच पर श्रीचरण द्वारा जब केक काटा गया तो जोरदार करतल ध्वनि के हर हर महादेव के जयकारे के माध्यम से सभी ने अघोरेश्वर श्रीचरण में अपनी-आस्था एवं विश्वास को दृढ़ किया। परम पूज्य संत बाबा प्रियदर्शी राम जी एवं समस्त संतों ने श्रीचरण को केक खिलाया एवं पावन हाथों से संतों को भी पीठाधीश्वर जी के द्वारा केक खिलाये जाने का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। मंच पर कार्यक्रम के दौरान कुशल डमरू वादक स्वयं सेवकों के द्वारा लगातार डमरू की ध्वनि से वातावरण शिवमय बनाया जाता रहा। तत्पश्चात् मंच पर उपस्थित विद्वत् जनों के द्वारा शान्तिपाठ सम्पन्न किया गया एवं श्रीचरण के द्वारा मंच पर उपस्थित संतों को अंग-वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। तत्पश्चात् परिणय परिधानों एवं शोभायमान उपस्थित समस्त छः वर-वधूओं को मंच पर आमंत्रित किया गया, जहाँ पूर्व से ही छः कलशों को आकर्षक रूप से ही अलग-अलग छः स्थानों पर सजाकर रक्खा गया था। क्रमागत रूप से युगलों के स्थान ग्रहण करने के बाद सर्वेश्वरी पद्धति से परिणय के निष्णात एवं भव्य व्यक्तित्व के स्वामी अघोर भक्त श्री दुर्गेश जी के द्वारा माइक के माध्यम से वैवाहिक कार्यक्रम का कलश-पूजन के साथ श्रीगणेश किया गया। सफल-योनि के सफल परायण के पश्चात् ऋषि भृगु, अंगिरा, आदम काल से प्रचलित पावन परिणय पद्धति को पढ़कर वर-वधू एवं समस्त परिजनों एवं साक्षियों को अवगत कराया गया। अब वर पक्ष के परिजनों ने वर-वधुओं को मंच पर चढ़ावा भेंट किया एवं शुभकामना प्रदान किया गया। तत्पश्चात् वर-वधू को संकल्प कराते हुए वधुओं के माता-पिता/अभिभावकों द्वारा कन्यादान की रस्म विधानानुसार पूरी की गई। तदोपरान्त प्रत्येक युगल के वधू द्वारा वर को, तदोपरान्त वर द्वारा भी वधू को जयमाल पहनाने की रस्म उत्साहवर्धक करतल ध्वनि एवं हर हर महादेव के जयघोष के साथ सम्पन्न करायी गयी एवं लावा मिलाई, परिछन के साथ ही वर-वधू के भावी मंगल दाम्पत्य जीवन के लिये एक दूसरे को ताम्बूल ग्रहण कराया गया एवं पद्धति के अनुसार माँ सर्वेश्वरी भगवती से उनके सफल वैवाहिक जीवन की कामना करायी एवं की गई। अन्त में सिन्दूरदान की रस्म विधानानुसार सम्पन्न किया गया एवं स्त्रियों द्वारा सौभाग्य सिन्दूर को बहोरने की प्रक्रिया भी पूरी की गई। तत्पश्चात् परम पूज्य की समाधि के पास बने स्थायी यज्ञशाला हवनकुण्ड में सप्तपदी की प्रक्रिया तीन-तीन युगलों से एक साथ पूरी करायी गयी। विवाहोपरान्त मंच पर परम पूज्य की श्रीचरण के द्वारा प्रत्येक युगल को स्नेहाशीष के साथ चुनरी युक्त कलश नारियल एवं अंगवस्त्र भेंट किया गया। इस नयनाभिराम मनोहर दृश्य को बड़े ही श्रद्धा, आस्था से लबरेज समस्त श्रद्धालुगण एकाग्रचित, अपलक निहारते रहे एवं मन ही मन समस्त उपस्थित (बाराती-घाराती एवं श्रद्धालुजनों के सौभाग्य की मंगल कामना करते हुए मन ही मन बधाईयाँ दी गई।

वैवाहिक कार्यक्रम के अन्तर्गत ही अन्नपूर्णा नगर में नीचे के तल में पुरुषों एवं ऊपर के तल में महिलाओं हेतु समिष एवं निरामिष व्यंजनों की शानदार व्यवस्था की गई थी जिसकी सुगन्ध स्थल परिसर में व्याप्त हो रही थी। घराती-बाराती एवं बाराती-घराती एक साथ मिलजुल कर व्यंजनों का रसास्वादन करते रहे तथा सामाजिक कुरीतियों को चुनौती देते हुए समरस समाज की स्थापना हेतु कृत संकल्पित होकर अघोरेश्वर की कृपा से कृत-कृत हो रहे थे। वर-वधू के परिजन महिला एवं पुरुष वर्ग अत्यन्त प्रसन्नचित्त एवं प्रफुल्लित मन से एक दूसरे से परस्पर वार्तालाप करते हुए एवं अघोर महिमा का गुणगान करते नजर आये। इस प्रकार शुभ मुहूर्त एवं अघोरेश्वर संतों के समक्ष व सानिध्य में सामूहिक परिणय कार्यक्रम जयघोष के साथ सम्पन्न हुआ जिसके साक्षी साक्षात् शिवशंकर एवं शक्ति के समुच्य माँ गुरु बने।

सामूहिक परिणय की इस मंगल बेला में विगत वर्ष के इसी मंच पर विवाहित युगलों को भी आमंत्रित किया गया था जिन्हें संस्था द्वारा सम्मानित किया गया एवं उनके भावी सफल दाम्पत्य जीवन की शुभकामना की गई।

दूसरे दिन दैनिक समाचार पत्रों में प्राकट्य दिवस की धूम एवं बिना दान-दहेज को आदर्श सामूहिक परिणय का समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किया गया था जिससे आज के बिगड़ती हुई सामाजिक व्यवस्था पर करार प्रहार कहा जा सकता है। खासकर आज राष्ट्र के रीढ़ युवा पीढ़ी के द्वारा इसे सहज स्वीकार किया जाना अघोरेश्वर की अहैतुकी कृपा का ही सुफल कहा जा सकता है। आतिशबाजी, नशापान गाजाबाजा एवं दिखावापन की फिजूलखर्ची के साथ आये दिन बारातियों एवं घरातियों के मध्य तनाव, झगड़ा एवं गोलीबारी की घटनाओं से स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। कहीं अश्लील नृत्य तो कहीं गाने की फरमाइश आदि आदि कुकृत्यों से समाज को सदा सर्वदा के लिये दूर रखने का एकमात्र विकल्प सदाचार के साथ सर्वेश्वरी की आराधना ही है जिससे दिनोंदिन हमारे युवा पीढ़ी का भविष्य उज्जवल होता रहे तथा नवयुवकों एवं ललनाओं में सामाजिक दायित्व का बोध हो सके एवं समरसता की भावना बलवती हो। समाज के एक जिम्मेदार नागरिक की हैसियत से अनाप शनाप खर्चे एवं जीवन भर दुःख, तनाव देने वाले कारकों से समाज की सुरक्षा अघोरेश्वर करते रहे ताकि हर व्यक्ति इस दुर्लभ जीवन के क्षणों को साकार कर सके एवं सफल जीवन जीने का हकदार हो सके।

आपका कोई जाति धर्म न हो मगर रक्त की शुद्धता तो अवश्य होनी चाहिए

चौथे पृष्ठ का शेष

पड़ रहा है, वह इसी की शुद्धता से ही दिखायी पड़ रहा है। आज जो हमारा पीछा कर रहे है। हमारे साथ लड़ रहे हैं, हमारे को बिल्कुल मिटा देना चाहते हैं- यह सब खून की अशुद्धता के कारण ही। हालांकि अशुद्धता का कारण, समझ में न आने के कारण वे लोग एक पागलपन की प्रवृत्ति अपनाये हुए हैं। अमानुषिक कार्यों में संलगन होते दिख पड़ रहे है। इस विज्ञान के युग में कोई भी समझदार व्यक्ति होगा वह समझ सकता है। समझने के लिए तो वे लोग भी समझेंगे, किन्तु वक्त लगेगा, टाइम लगेगा। एक पुश्त तो हमारा सब नष्ट हो ही गया। स्वतंत्रता के बाद जो हमारा यह पुश्त था, उसमें बहुत गिरावट आ गयी है। यह हमारी कमजोरी थी या भागदौड़ थी या हमारी लोलुपता थी। मगर अब हमें यह चाहिये कि आने वाली पीढ़ी का रक्त शुद्ध रखें। रक्त को शुद्ध रखकर अपने धरोहर को नष्ट होने से बचायें। वही जब बचा रहेगा तभी हम इन देवता, देवी, भगवती या ईश्वर जो भी हैं- इनकी कल्पना करने में, इनका मनन करने में, इनका चिन्तन करने में हम अपने आपको इनके तक पहुँचा सकते हैं।

हमें तो वे बराबर ढूँढ़ती ही रहती हैं। हमारा ऐसा कौन पूज्य होगा जो हमें नहीं ढूँढ़े। सदैव ढूँढ़ते रहते हैं। मगर हमारी गलतियों का पर्दा नहीं, हमारी कमजोरियों का पर्दा नहीं, ये हमको आच्छादित करके एकदम अलग-थलग कर देती हैं। इस अलग-थलग के कारण हम अपने जीवन का जो आनन्द है, सुख है, समृद्धि है, उस सुख, शांति, समृद्धि को नहीं प्राप्त होते। एक दूसरे के ईर्ष्या, द्वेष और घृणा में बहे चले जा रहे हैं। आखिर मनुष्य देखता है कि यह ध्रुव सत्य है- यहाँ इस भूमि पर बड़े-बड़े लोग आये और चले गये, कोई रहा नहीं और रहने के लिये किसी का यहाँ विश्रामसमूह भी नहीं बना कि वे विश्वास करें। बहुतों ने अपना हजारों नाम छपवाया कि नाम हो अरे भइया! किसका रहता है? वह तो इतना जल्द मिटता है, इतना जल्द नष्ट होता है कि कहो मत! एक मामूली सी बात समझ लो। तुम्हारे नाम से कोई जरजमात है, तुम्हारे ही लड़के उस अटवारी-पटवारी से मिलकर कहते हैं इस नाम को खारिज करो, मेरा नाम दाखिल करो। बड़ी छोटी सी बात है। तो इसके (नाम के) लिए हमें मरने की आवश्यकता नहीं।

हम किसके लिए मरे? किसके लिए कुछ करे? उस अज्ञात के लिए? उसी अज्ञात के चरणों में समर्पित हो। हम उसे नहीं जानते किन्तु वह हमें हर प्रकार से जानता है। उसके साथ हमारी अनुकूलता किस प्रकार से होगी? हमारा सुख, समृद्धि कैसे होगा? बहुत ही अच्छे ढंग से होगा। जब हमारी अनुकूलता उनके साथ होगी। हर एक के जीवन में उतार, चढ़ाव होता है। उस वक्त अपने आप होता है। उसमें हमें किसी की कोई मुरौवत करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। चाहे वह भगवान हो, भगवती हो- कर्मों ने इन्हें भी नहीं छोड़ा है। उनके साथ भी कर्म का प्रपंच लगा हुआ है। जो जैसे पथ से चलेगा उस पथ पर चढ़ाव, उतार, ढलान वैसा होता ही रहेगा।

पूज्य बाबा ने आगे कहा कि हम लोगों का जीवन बड़ा ही उबड़-खाबड़ हो गया है। जब तक उबड़ खाबड़ जीवन रहेगा, तब तक हम टेढ़-टाढ़ चलते ही रहेंगे, गलत सही काम करते ही रहेंगे। हमारा जीवन जब समतल होगा तब हमारे जो सैकड़ों बच्चे हैं, सैकड़ों बूढ़े, सैकड़ों महिलायें, सैकड़ों प्राणी हैं- उन्हें सुख शान्ति मिलेगी। सुख और शान्ति मिलने के बाद समृद्धि अवश्यम्भावी है। उसे वे प्राप्त करेंगे।

बंधुओं! इस नवरात्र के पवित्र पर्व के अवसर पर उन चिन्मयी भगवती को, जिन्हें हम देख नहीं सकते हैं, इन चक्षुओं से जिनकी आवाज को इन श्रवणों से सुन नहीं पाते हैं, जिनकी वाणी से अपने मुखमज्जन पान तक नहीं कर पाते हैं और जहाँ तक हमारी भुजा नहीं पहुँच पाती हैं, उससे उनकी लम्बी भुजा है। हमें जो कुछ भी सुलभ है-अन्न, जल, फल अपने इसमें (पिण्ड) आहुति देते हैं वैश्वानर को तृप्त करते हैं। यह वैश्वानर हमें अच्छे मेधा दें और अच्छे मेधा को प्राप्त होने पर, सुरत भी अपने आपमें लग जायेगी। जब सुरत लग जायेगी तो समाधि भी लगेगा।

वह माता ही हो सकती हैं जो हमारे जीवन के प्रति सदा जागरूक रहे

धर्मबंधुओं !

इस नवरात्र का जब से शुभारम्भ हुआ है, आप में कितना हुलास, उत्साह और वह वेग रहा है जिससे पूजन, चिन्तन, मनन से आप लोग थका थका महसूस नहीं कर रहे होंगे। बिलकुल आप लोगों को नये उत्साह के साथ देख रहा हूँ। बन्धुओं, माताओं ऐसा ही होना चाहिये और ऐसा ही जीवन जीने सरीखे होता है। साथ ही पूजन से पहले एक व्यवहारिक क्रिया प्राणायाम अवश्य करना चाहिए। चाहे पूजन का समय, काल रहे या नहीं रहे, सुबह-शाम, बारह बार तक भी प्राणायाम करने से एक विद्युत सा अपने शरीर में दौड़ जाता है और वह विद्युत हमें स्फूर्ति देती है, तेज देती है, पौरुष देती है और हमें बड़ा ही एक मन पर स्थिरता देता है। वह प्राणायाम बाहर से भीतर रोक कर धीरे-धीरे दाहिने स्वर से उतारते हैं। जो इसे करते आ रहे हैं, यह उनकी व्यवहारिक क्रिया, मुझे जहाँ तक विश्वास है वह विद्युत किरणें आप लोगों को वैसा ही किया होगा और उन्हें थकन महसूस नहीं किया होगा और उन्हें थकान महसूस नहीं होती होगी। यदि यह करते रहेंगे तो आप लोगों की बराबर स्फूर्ति बनी रहेगी। उस स्फूर्ति से बहुत कुछ जो न समझ में आता है, न देखने में आता है, जो न किसी शास्त्र में है, न किसी शिलालेख में है जो न किसी द्वारा स्फुरित किया गया है, वह भी आपको समझ में आने लगेगा कि यह ऐसा, ऐसा होगा और उस पर आपका मन भी मानने के लिए तैयार हो जाता है। वह मन स्थिर होकर कहता है, हाँ ऐसा ही है। ऐसा मन महसूस करने लगे तो आप समझ जाइये आपमें वह विद्युत शक्ति प्रवाहित हुई है जिससे आपका मन-मस्तिष्क, हृदय भी स्फूर्ति के साथ, सुगन्धमय वातावरण में प्रफुल्लित हुआ है।

बन्धुओं! हमारी जो उपासना है, साधना है, आप सोच लें, इसके बगैर जीवन जो जीते हैं, वह वैसे ही जीते हैं जैसे कि अपनी ही लाश अपने सिर पर लादे फिर रहे हैं। उनको आप कुछ समझा नहीं सकेंगे। जो सात करोड़ राम भी हो जाय, जन्म भी ले लें, दूसरा ईसा भी जन्म ले लें तो भी ऐसे लोगों को समझा नहीं पायेंगे। वे उनके पीछे डण्डा लेकर फिरेंगे कि आप वो हई नहीं हैं। हम आपको मानने के लिए तैयार नहीं है। उनके लिए कुछ हयी नहीं है। वह वैसे ही हैं जैसे बहुत से प्राणी अपने जीवन पर्यन्त, जन्म लेकर अपने आचरण और व्यवहार से वातावरण को दूषित कर फिर उसी में प्रवेश कर जाते हैं। क्योंकि उन्हें पृथ्वी के कोई अच्छे जन, अच्छे कोई प्राणियों का तो ख्याल नहीं, कुछ भी नहीं। ऐसे मोह में ग्रसित लोग हैं चाहे वह मनुष्य प्राणी ही क्यों न हों, पशु को तो वह निमित्त मात्र होता है। मगर मनुष्य में बहुत होता है। परम्बा प्रकृतिमयी माँ बिलकुल विलगा देती हैं, समझ जाती हैं। वह अपरिचित नहीं हैं। हमसे पूर्ण परिचित हैं। इसलिए समझ में आता है कि पूर्ण परिचित हैं, संध्या को जब गायें चर के आती हैं तो उनके बच्चे खोल दिये जाते हैं। वो भी झुण्ड में रहती हैं और बच्चे भी दो, चार, पाँच के झुण्ड में रहते हैं। वे अपनी माता को सूँघ कर समझ जाते हैं, और वह गऊ भी अपने बच्चों को सूँघ कर समझ जाती है। उसे अपना स्तन थमा देती है। वो अमृतमय क्षीर पीते हैं और वह चाटती है, अपना वात्सल्य देती है। दूसरा कोई बच्चा को नहीं पिलाती है। दूसरा जाता है तो वह टारती है। उस पर कोई चिन्ह लगा दिया गया हो, रेखा किया गया हो, सो बात नहीं। लाल या काला वस्त्र पहना दिये हो या कोई लंगोटी पहना दिये हो या गर्दन में माला का झुण्ड डाल दिये हों जिससे पहचान में आये कि मेरा ही पुत्र है या उसकी माता के गले में घंटी बंधी हो, यह देखने में नहीं आता। ऐसा कुछ नहीं है। उसके गन्ध से, उसके सुभाव मात्र से वह समझ जाती हैं।

तो हमारा भी स्वभाव वैसा ही होना चाहिये। जब हम मंत्रोच्चार करते हैं, उस बछड़े की तरह जो अबोध है तो वह बिलकुल समझ जाती है। अभी उसको पूरी चेतनता नहीं प्राप्त हुई है। दूसरी तरफ भी भाग कर जाता है मगर फिर लौट आता है। ऐसी अबोध अवस्था में वह पहचान लेती है। उसकी माता पहचान लेती है गंध से कि यह हमारा पुत्र है जिसको बहुत दिनों तक गर्भ में ढोयी हूँ और उसे अपने आपसे अपना प्यारमय, स्नेहमय दूध पिलाती है। उसी तरह से बंधुओं सही माने में जिसकी हम उपासना, चिन्तन करते हैं तो हमारी वेश-भूषा, माला से वो शायद ही पहचान सकें। वह तो स्वत: पहचान लेती हैं, गंध मात्र से। आपकी वाणियों को इतना मधुर बना देती हैं, आपका इतना अच्छा श्रोतापन बना देती हैं कि कहा नहीं जा सकता। कितनी अपनी वाणियों का आपका ओज हो जाता है, कितना किसके साथ बोलना चाहिये, आलाप करना चाहिए, बिल्कुल उस बर्बरता से हम विलग हो जाते हैं। यह तो सुभाव में आ जाता है।

बंधुओं! हमारी जो उपास्य हैं, हम जिनकी उपासना करते हैं और जो मेरी उपासना करती हैं, वह माता ही हो सकती है। क्योंकि दूसरा कोई हो नहीं सकता जो मेरे पीछे-पीछे फिरे, मेरे हर क्रिया-कलाप पर उसकी दृष्टि जाती है, मेरे हर कर्त्तव्यों पर उनकी दृष्टि जाती रहती है। यदि सही माने में ऐसा है, वास्तविक में सच है तो आप उसे समझें क्योंकि आपका सच समझने से गलत काम आपसे कभी बन नहीं पायेगा।

शेष अगले अंक में

आपका कोई जाति धर्म न हो मगर रक्त की शुद्धता तो अवश्य होनी चाहिए

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

मुड़िया साधुओं!

आज इस नवरात्र के पवित्र पर्व के अवसर पर सन्ध्या वेला में आप लोगों ने जो गोष्ठी रखा, वह कोई बहुत इधर-उधर की बातें करने कोई नहीं है। आपके साथ मैं भी जो कुछ बातें कर रहा हूँ, वह यही जैसे घर परिवार में कुछ अपने दिनचर्या के बारे में बोल-बतिया लिया जाता है। यह उसी ढंग का है। कोई उसके लिये आपसे मैं रामायण गीता का प्रवचन नहीं देने जा रहा हूँ और न कोई ऐसी फिलासफी की ही व्याख्या करने जा रहा हूँ। इससे जीवन में कोई खास नतीजा निकलने का नहीं है। अपने इस तरह से, जो साधारण जिनके प्रति हमारा लगाव है और जो हममें बैठ कर प्रेरित करती रहती हैं महामाया भगवती को हम सब प्राणी कौन नहीं जानता? किन्तु बात यह है कि हम लोग मोह में ग्रसित होने के कारण, उनको समझ नहीं पाते हैं।

हमें शतचण्डी का वह वाक्य याद आ जाता है कि सुमेधा ऋषि समाधि और सुरथ के सामने भगवती की विवेचना करने के लिए तत्पर होते हैं तो यही कहते हैं- महामाया! महामाया कहे तो न लोगों का पलक खुला, चक्षु खुला, चारों दिशाओं में दृष्टि दौड़ा, प्राप्त करने के लिये। फिर वे कहते हैं- महामाया के मोह में ग्रसित, देख रहे हो इन पक्षियों को अपने भूखे-प्यासे रह कर, कितने चाव से अपने बच्चों के उद्र पालन के निमित्त, अन्न के कुछ कणिकाओं को उनके मुख में डाल रहे हैं। यह जानते हुए कि पंख जम जाने के बाद ये न हमारे दु:ख में न हमारे सुख में किसी प्रकार से भी काम नहीं आने वाले हैं। इनको तो पंख जमेगा कहीं उड़ जायेंगे, ये कभी पूछने तक नहीं जायेंगे।

इसी तरह से हम लोग जब महामाया के मोह का संयोग उत्पन्न होता है, मोह में ग्रसित हो जाते हैं। नहीं समझ पाते। यह समझते हुए, जानते हुए, देखते हुए भी, नहीं समझ पाते। वह हमारा मोहरूपी जो फांस है, उसका समापन हो हम इसीलिए भगवती का नवरात्र में चिन्तन करते हैं। न कि इसलिए कि वे हमें कोई ऐसी अद्भुत सामग्री दे दे ऐसा सामान दे दे, जो हम दूसरों को दिखा कर, उसमें मोह पैदा करें। दूसरों को दिखा कर हम कृति भी प्राप्त कर सकते हैं और अप्रकृति भी प्राप्त कर सकते हैं।

महाराजा साहब ने अभी जैसा कहा कि हमलोग इस वक्त बड़े ही एक तरह से विक्षिप्त अवस्था में हैं। नहीं मालूम पड़ रहा है- क्या करें? मगर इतिहास यही कहता है कि वह भगवती दुर्गा, जो दुर्ग में रहने वाली, दुर्ग से निकलकर इन सांड़, भैंसों के सींगों को तोड़ा है, बद्ध किया है, मारा है। ये पूँछ भी उछालते हैं, पांव भी उछालते हैं, सींग भी उछाले हैं, मस्तक मूँडी भी उछालते हैं। इतना उद्दण्ड तो हैं ही वे। सभी अंगों से वे प्रहार करते हैं। उस वक्त हमारे पास तो कोई हथियार है ही नहीं जिस हथियार से उसका समापन किया जा सके। किन्तु जो कुछ ईंटा, डंडा, पत्थर मिलेगा, उन्हीं से उसका सींग तो तोड़ेंगे ही। यह सुनिश्चित है।

आगे पूज्य बाबा ने कहा कि यह भी सुनिश्चित है कि वह भवानी, जो हमारे भावनाओं में वह नहीं रही हैं, वह हम सभी मनुष्यों प्राणियों में उज्ज्वल भविष्य के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। विशेषकर उसके लिए ज्यादे तत्पर रहती हैं जो उनकी उपासना करता है, चिन्तन करता है, मनन करता है। हम लोग तो याद ही नहीं कर पाते- बैठते हैं उनकी याद करने के लिए; तब तक नाना प्रकार की व्यग्रता, व्यथा, व्याकुलता आकर हमें चिन्तन से बिल्कुल विमुख कर देती हैं। हम समझ नहीं पाते। उनकी तो बहुत ही दया है। उनकी दया के पात्र हम कितना हैं ना हैं, हम कह नहीं सकते।

महाराजा साहब कह रहे थे कि आपने बहुत तकलीफ झेला, शारीरिक और मानसिक भी। उसके साथ-साथ जो लोग हमसे लगे हुए हैं, उन लोगों ने भी इस दु:ख को सहा। आपका तो भारत का इतिहास ही कहता है, राम से लेकर कृष्ण तक और भी जितने भी महापुरुष हैं, सबके साथ यह उत्पात शुरू हुआ है और इस उत्पात को, उन लोगों ने भी सम्मान दिया है, उसे आदर दिया है, स्वीकार किया है। उससे भागे नहीं है। हम कहेंगे- हम लोग भागे नहीं, उसका सामना करें। वही सामना हमें उस महान शक्ति की श्रेणी में ले जाकर पहुँचायेंगी। हमें पूर्ण विश्वास है और इसी विश्वास के साथ हम जी भी रहे हैं। साथ ही विश्वास के साथ-साथ हमें श्रद्धा भी है। अमोघ श्रद्धा।

बन्धुओं! श्रद्धा एक हल्का फुल्का वस्तु होता है। श्रद्धा सभी पर किया जा सकता है और विश्वास एक पर ही किया जा सकता है विश्वास प्राप्त किया जाता है। हम श्रद्धा को ज्यादे महत्व न देकर, अपने विश्वास को विश्वसनीय बनायें। हमें जब तक अपने आप पर विश्वास नहीं होगा, जो कुछ भी मैं कर रहा हूँ, यह सही है, उचित है और जो कुछ मुझमें हो रहा है, यह ठीक उसी दिशा की तरफ ले जा रहा हैं जिसका कहीं रूकावट नहीं। अनवरत यह वायु की तरह चलता रहता है। इसका कोई पड़ाव नहीं। इसी तरह से हम लोगों में एक अनवरत- एक अभ्यन्तर में, जबसे उनकी याद, आयी; कभी-कभी आ गयी उनकी याद उनके प्रति हम को भय पैदा हुआ, तो वह अनवरत अपने आप में चल रहा है। वह भय इतना प्यार और इतना स्नेह से भरा हुआ भय है कि कहा नहीं जा सकता। वही भय तो हमें अनेक दु:खों में मुक्ति दिलाता है। यदि हम एक से डरता रहूँगा, तो हमें किसी और से डरने की आवश्यकता नहीं है।

पूज्यपाद बाबा ने आगे कहा कि इस प्रकार से हम महान विजय को प्राप्त कर सकते हैं। तभी उस दुर्ग में रहने वाली दुर्गा, चण्डी हमारा आलिंगन करेंगी, हमारी शत्रुओं का वध करेंगी। वह काली रूप भगवती कालिका भारत माता जो अपने शहीदों की मूड़ियों की माला अपने गले में रखकर काली के नाम से आज प्रसिद्ध हैं, उन्हीं महाकाली, महालक्ष्मी, महा सरस्वती जो वाणी के माध्यम से हम अपने उच्चारणों के माध्यम से, अपने आपको उस आनन्द को, उस सुख को प्राप्त करते हैं। वही हमारे महान सिद्धि-धातृ होती हैं। अपनी वाणी इतनी उर्ध्व हो जाती है कि जब वागीश्वरी को याद करते हैं अपने वाणियों पर वह सब तृष्रेणु जो हैं, अणु, परमाणु, किरणों के रूप में आ कर एकत्रित होते हैं, उन्हीं वाणियों का संचालन अपने आप शुरू होता है जिस तरह के चाहे कार्टूनी देवी की कल्पना करते, चाहे निरंकार देवी देवता की प्रार्थना कर लें, आपको सभी को छूए हुए, कम्पन करते हुए मालूम होता है कि हमारा मन और मस्तिष्क कितना साथ दे रहा है और हममें उस महामाया भगवती का आदुर्भाव हो रहा है। अपने आप में वे प्रगट हो रही है।

महामाया भगवती के प्रगट होने के कारण हमारा मन बड़ा ही प्रसन्न रहता है। हमारी वैखरी खुली रहती है और हमारी योनियाँ जागी रहती है। हमें इस जगत में अभाव कुछ नहीं मालूम होता है। सब भाव ही भाव मालूम होता है। अभाव तो तब मालूम होता है, जब हमारी दुर्बलताएँ, हमारी कमजोरियाँ हमें तिलमिला देती हैं। काश! हमारी दुर्बलताएँ हमारी कमजोरियाँ एहसास करें कि हम अपने पशु प्रवृत्तियों को अपने इष्ट के साथ न जोड़ें! किन्तु वे जुटती ही रहती हैं। बहुत से महापुरुषों के साथ भी ऐसा होता रहा है। इसलिए आशा है कि ऐसा होगा ही।

इसीलिए नवरात्र में हम उस महाशक्ति का पूजन करते हैं, मनन करते हैं, चिन्तन करते हैं, नियमित भी रहते हैं, साथ ही अपने सात पुस्त तक की रक्त-शुद्धता भी बनाये रखते हैं, यदि हमारे खून में भी शुद्धता नहीं रही तो फिर बड़ी समस्या हो जाती है। क्योंकि इस मनुष्य जीवन में खून की शुद्धता की परम आवश्यकता पड़ती है। खून की शुद्धता होती है तभी एक भाई एक भाई को खून दे सकता है, एक बन्धु एक को खून दे सकता है तभी एक का अंग एक के अंग में जोड़ा जा सकता है। यदि उसके खून में शुद्धता नहीं है तो आज का विज्ञान भी उसे स्वीकार नहीं करता। बिल्कुल छाँट देता।

हमें इन बच्चियों से और इन नवयुवकों से भी यह बात कहना है कि अपने सात पुश्तों तक की रक्त शुद्धता को अवश्य बनाये रखना चाहिए। आज हर एक जाति-कास्ट में बँट गये हैं। आपकी तो कोई जाति ही नहीं होनी चाहिए। न कोई कास्ट होनी चाहिए। न कोई धर्म। मगर रक्त की शुद्धता तो अवश्य ही होनी चाहिये। रक्त की शुद्धता से हम लोगों का जीवन स्वच्छ और शुद्ध रहेगा।

पूज्य बाबा ने आगे कहा आज तक जो कुछ भी किसी रूप में इस भूमि पर दिखायी

शेष पृष्ठ तीन पर

अघोर सूत्र

- **तत्काल निर्णय करना कमजोरी का द्योतक है।**
- **समूह से कपट, मित्र से चोरी तथा गुरु से छल नहीं करना चाहिये।**
- **उपकार के बदले कृतज्ञता दे सकते हैं–उपदेश नहीं।**

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी